पाठशाला
भीतर और बाहर

पाठकों के विचार

मीनू पालीवाल के लेख 'लेखन ग़लतियाँ और उनका विश्लेषण' में बच्चों में लेखन सम्बन्धी जो समस्याएँ रहती हैं उनपर बहुत बारीक़ी से समझ बनाने की कोशिश की गई है। चूँकि लेखन कार्य का बच्चों की परिवेशीय भाषा के साथ जुड़ाव होता है, इसे भी समझने की आवश्यकता है। बच्चों को परस्पर आकलन का भी अवसर दिया जाना चाहिए जिससे वे आपस में मिलकर ग़लतियों को ठीक कर सकें।

लेख में बच्चों द्वारा लेखन में की जा रही ग़लतियों पर फ़ोकस किया गया है, लेकिन इन ग़लतियों के पीछे रहे महत्त्वपूर्ण कारकों पर शिक्षक समूह के साथ चर्चा कर समझने या ये स्वयं इनपर कैसे कार्य करते हैं? इनका लेखन में ग़लतियों पर क्या दृष्टिकोण रखते हैं? और इनपर कार्य कैसे हो सकता है? पर विचार-विमर्श की आवश्यकता लग रही है।

यह आलेख और भी उपयोगी होता जब बच्चों की इन लेखन सम्बन्धी त्रुटियों के सुधार के सरल तरीक़ों को भी शामिल किया जाता। बच्चों के साथ सीखने-सिखाने का काम कर रहे व्यक्तियों को लेखने प्रक्रिया की ख़ामियों को समझने और इस प्रकार प्रक्रिया को बेहतर करने में मदद मिलती है।

– मुकेश चंद शर्मा, अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन, दमोह, म.प्र.

इस बात से सहमति है कि बच्चे आरम्भिक कक्षाओं में लिखने-पढ़ने की मूलभूत दक्षताओं से ही जूझ रहे हैं। इसके कई सारे कारण हैं। महत्त्वपूर्ण यह कि स्कूल में ही पढ़ने-लिखने को किस तरह से देखा जाता है।

लेखन एक सतत चलने वाली प्रक्रिया है। इसके लिए ज़रूरी है कि बच्चों को लिखने-पढ़ने के प्रचुर मात्रा में अवसर मिलें। यह अवसर किताबों के अलावा भी सायास देना चाहिए। साथ ही लेखन के दौरान होने वाली ग़लतियों को थोड़ा नज़रअन्दाज़ करें। अन्यथा ज़्यादा शुद्धता का आग्रह बच्चों की लेखन में रुचि विकसित नहीं होने देता और वह इससे दूर होने लगते हैं।

– प्रेरणा मालवीय, अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन, भोपाल, म.प्र.

'पैकिंग कवर (रैपर) और पढ़ना-लिखना' लेख में लेखिका श्रीदेवी ने बच्चों के साथ होने वाले आपसी संवाद को काफ़ी महत्त्व दिया है और रैपर को एक संसाधन के रूप में स्थापित करने का प्रयास किया है जो कि काफ़ी महत्त्वपूर्ण है। क्योंकि बच्चे अपने आसपास रैपर के रूप में लिखित सामग्री से अनायास ही परिचित होते रहते हैं, अतः इसपर बच्चों से बातचीत करना पठन कौशल के लिए एक महत्त्वपूर्ण गतिविधि हो सकती है। लेखिका ने पढ़ना सीखने के परम्परागत तरीक़ों से इतर तरीक़ों पर बेहद प्रभावशाली ढंग से अपना नज़रिया रखा है। छह-सात रैपर पर किए गए

कार्य को विस्तार से लिखा जाता तो इस सम्बन्धित गतिविधियों को कक्षा में कराने के सन्दर्भ में और भी मदद मिलती।

– विमल मिश्रा, अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन, रेहली, सागर, म.प्र.

बच्चे अपने साथ बहुत कुछ लेकर स्कूल आते हैं– अपनी भाषा, अपने अनुभव और दुनिया को देखने का अपना नज़रिया, आदि। बच्चे घर, परिवार एवं परिवेश से जिन अनुभवों को लेकर स्कूल आते हैं, वे बहुत समृद्ध होते हैं। उनकी इस भाषाई पूँजी का इस्तेमाल भाषा सीखने-सिखाने के लिए किया जाना चाहिए। लेख में ये बात स्पष्ट रूप से लिखी गई है कि बच्चों के सीखने में उनके परिचित सन्दर्भों की बहुत अहम भूमिका होती है। रैपर के माध्यम से शिक्षिका द्वारा कराई गई गतिविधियाँ अनेक भाषाई कौशलों के विकास की ओर बच्चों को ले जा रही होती हैं। जैसे– सुनना, बोलना, पढ़ना, लिखना, आदि। बच्चों के परिवेश से उनको जोड़ें तो कैसे वे अपने विचारों को व्यक्त करते हैं, वस्तुओं (रैपर) का विश्लेषण करते हैं, वर्गीकरण करते हुए अपने अनुभवों को साझा करते हैं, कुछ बातों पर तर्क भी देते हैं एवं अवलोकन करते हैं। ये कुछ पर्यावरण अध्ययन के कौशल भी हैं, जिनका साथ-ही-साथ विकास हो रहा है, ये भी ध्यान देने वाली बात है।

साथ ही शिक्षिका कक्षा में प्रिंट रिच वातावरण का निर्माण भी बच्चों द्वारा बनाई गई चीज़ों से करती दिखीं। इससे बच्चे सन्दर्भात्मक संकेत (जैसे– चित्र, स्थान, वस्तुएँ, रंग या आरेख) का उपयोग करके अपने परिवेश में मौजूद लिखित सामग्री का अर्थ समझना सीख लेते हैं, वे 'वास्तविक' पठन की ओर ज़्यादा आसानी से बढ़ सकते हैं। इस प्रदर्शन से अधिगम को बल मिल सकता है साथ ही अपने कार्य पर गर्व महसूस करने का अवसर मिलता है। बच्चे के स्वयं के लेखन को प्रदर्शित करने से उन्हें प्रेरणा भी मिलती है।

यदि वो रैपर पर लिखे दाम, तारीख़, वज़न, आदि को भी शामिल करतीं तो गणित के कुछ कौशलों पर भी काम किया जा सकता था। इस पूरी प्रक्रिया के दौरान उनके अनुभवों से काफ़ी कुछ सीखने, समझने को मिला। बच्चों के जीवन से जुड़ी वस्तुओं को अगर केन्द्र में रखा जाए और फिर बातचीत के माध्यम से बढ़ा जाए तो पढ़ना और लिखना सीखना आसान हो जाता है। ख़ासतौर से वो बच्चे जो पाठ्यपुस्तक पढ़ाने के दौरान ध्यान नहीं देते उनकी सहभागिता को बढ़ाया जा सकता है।

– सबा ख़ान, अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन, खुरई, सागर, म.प्र.

अव्वल तो आलेख के शीर्षक ने ही ध्यान खींचा। 'जब बच्चों ने मापी दोस्ती', लगा कि मापन की कोई गतिविधि होगी। जबकि नीतू सिंह का ये आलेख पुस्तकालय की गतिविधियों के इर्द गिर्द कक्षा अनुभवों पर आधारित है। रीड अलाउड गतिविधि के बारे में बहुत ही तार्किक और उपयोगी सामग्री दी गई है। रीड अलाउड के साथ कहानियों पर चर्चा का एक अच्छा सिलसिला दिखा। चर्चा के बाद सामूहिक गतिविधि कराना बच्चों को कहानी के अनुभव के साथ ही एक अगले स्तर पर ले जाता है। आलेख में यह भी समझ आया कि कोई भी कहानी उठाकर सिर्फ़ सुना देना पर्याप्त नहीं है। एक फुल प्रूफ़ योजना व तैयारी के साथ ही सुनाना और चर्चा की जा सकती है। इसके दोनों अच्छे उदाहरण लेखिका ने दिए हैं।

कहानी छोटी हो या बड़ी, किताब रंगीन हो या ब्लैक एंड व्हाइट, बच्चों की रुचि इस बात से बनती है कि आप उनसे बात क्या करते हैं, उनकी बातों को जगह कितनी देते हैं, और निजी जीवन से जुड़ाव के मौक़े कितने बनाते हैं। आलेख से रीड अलाउड गतिविधि के बारे में एक सम्पूर्ण समझ बनी है।

– भरत सिंह, शिक्षक प्रशिक्षक, सीएमएफ़ जयपुर, राजस्थान

‘बच्चे, कहानियाँ और बातचीत’ में लेखिका अलका तिवारी ने कहानियों को बातचीत का माध्यम बनाया, इस प्रक्रिया से भाषाई कौशल का विकास होता नज़र आता है। किताबों के साथ हिन्दी और अँग्रेज़ी के ऑडियो को भी शामिल किया ताकि बच्चों को विविध, रोचक सन्दर्भ मिल सकें। इन सन्दर्भों से बच्चे हँसें, गुदगुदाएँ, एक दूसरे को सुनें और दुनिया की ख़ूबसूरती की झलक देख पाएँ। इस काम को आगे बढ़ाने में बच्चों के साथ शुरुआती बात करना, उनकी सहमति से आगे बढ़ना कि हम रोज़ कोई-न-कोई किताब पढ़ेंगे, अनुभव साझा करेंगे, इससे कक्षा में लोकतांत्रिक मूल्यों की झलक मिलती है।

बच्चों के स्तर के अनुसार उन्होंने कहानियों का चुनाव किया। कहानी पढ़ने के बाद बच्चे अनुभव के साथ जोड़ते हुए उस कहानी के बारे में बात करते हैं। इस विमर्श में बच्चे अपने विचार स्वतंत्र रूप से रखते हैं जो तर्क पूर्ण और अनुभवजनित हैं। इस विमर्श में शिक्षिका मॉडरेटर की भूमिका में होती हैं और अन्त में विमर्श का समेकन भी करती हैं।

लेखिका अपनी बात उन उदाहरणों को शामिल करते हुए रखती हैं जो कक्षा-कक्ष में हुए। यदि बच्चों के सवालों के जवाब उन्हें नहीं पता होते तो वे मालूम करके बताने को कहती हैं, जबकि ज़्यादातर मामलों में देखने को मिलता है कि शिक्षक तुरन्त जवाब देते या डाँट देते हैं।

यह लेख कहानियों पर कार्य करने और उनपर बात करने का दृष्टिकोण देता है।

– सत्यप्रकाश, अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन, रेहली, सागर, म.प्र.

कमलेश जोशी के लेख ‘किताबों पर बातचीत’ में बातचीत करने के उद्देश्य, ज़रूरी सवाल, कहानी का बच्चों के जीवन व अनुभवों के साथ जुड़ाव बनाकर प्रस्तुत करके एक व्यवस्थित बात शिक्षक तक पहुँच रही है। जिन स्कूलों में पुस्तकालय है, वहाँ के शिक्षकों के लिए तो उपयोगी होंगे ही, जहाँ पुस्तकें नहीं हैं वहाँ के शिक्षकों के लिए भी एक विचार मिल सकेगा कि बाल साहित्य का मतलब क्या है और इसका उपयोग किस तरह से उपयोगी रहेगा?

– राम नरेश गौतम, अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन, खुरई, सागर, म.प्र

अज़ीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी की पत्रिका *पाठशाला भीतर और बाहर* ने हिन्दी में गुणवत्तापूर्ण अकादमिक आलेखों की कमी को पूरा किया है। ‘शिक्षणशास्त्र’ और ‘कक्षा अनुभव’ स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित होने वाले इसके आलेख नए आइडियाज़ और पठनीयता की दृष्टि से बहुत ही उपयोगी हैं। राजस्थान स्टेट काउंसिल फॉर एजुकेशनल रिसर्च एंड ट्रेनिंग (RSCERT) ने स्कूल बन्द होने के दौरान शिक्षकों और बच्चों के लिए *हवामहल* नाम से साप्ताहिक रूप से ई-सामग्री उपलब्ध कराना शुरू की है। सामग्री चयन और उसकी प्रस्तुति में सीएमएफ़ संस्था की भागीदारी है। संस्था के प्रतिनिधि के रूप में हवामहल के लिए मैंने पाठशाला से कई आलेखों का इस्तेमाल किया है। शिक्षकों के लिए ये आलेख बहुत ही उपयोगी हैं। एक अच्छी पत्रिका के प्रकाशन के लिए सम्पादकीय टीम को बधाई।

– दिलीप शर्मा, सीएमएफ़ उदयपुर, राजस्थान

लेखिका संगीता फ़रासी द्वारा प्रस्तुत लेख ‘पढ़ना-लिखना और दीवार पत्रिका’ में सिर्फ़ प्रक्रिया, क्रियान्वयन का नहीं, अपितु इस प्रक्रिया में आई चुनौतियों और प्रक्रिया उपरान्त बच्चों में आए

बदलाव का लेखा-जोखा भी है। लेख प्रारम्भिक कक्षाओं में बच्चों को विद्यालयी प्रक्रिया से जोड़ने और उन्हें विभिन्न गतिविधियों द्वारा पढ़ना-लिखना सीखने के अवसर देने सम्बन्धी बिन्दुओं पर समझ प्रदान करता है। इस दौरान जो गतिविधियाँ की गईं वह दीवार पत्रिका रूपी एक प्रतिफल के रूप में समझी जाएँ। दरअसल हम दीवार पत्रिका को पढ़ने-लिखने से अलग प्रक्रिया के रूप में नहीं देख सकते क्योंकि यह समूची प्रक्रिया से गुज़रकर बच्चों की मुखर प्रतिभा को तराशने, निखारने का माध्यम है।

जब हम दीवार पत्रिका की बात करते हैं तो वह एकाकी प्रक्रिया न होकर विद्यालय की समस्त गतिविधियों एवं प्रक्रियाओं पर निर्भर करती है। यह विद्यालय असेम्बली से शुरू होकर कक्षा-कक्ष, मिड-डे मील, रीडिंग कॉर्नर और प्रस्थान सभा के साथ ख़त्म होती है। इन्हीं मौक़ों को हम सीखने-सिखाने का सक्रिय माध्यम बना सकते हैं। इन प्रक्रियाओं में शामिल होकर बच्चों में धैर्य से सुनने एवं अपनी बात रखने का कौशल विकसित हुआ। दीवार पत्रिका के सामूहिक वाचन द्वारा बच्चे एक दूसरे की ग़लतियों को समझते और सही करवाते हैं। इस तरह बच्चे स्वयं ही एक दूसरे को सीखने-समझने में मदद कर रहे हैं।

– लवकुश, अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन, रेहली, सागर, म.प्र.

मुद्रक तथा प्रकाशक मनोज पी. द्वारा अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन फॉर डेवलपमेंट के लिए अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन, प्लॉट नं. 163-164, त्रिलंगा कोऑपरेटिव सोसाइटी, E-8 एक्सटेंशन, त्रिलंगा भोपाल, मध्यप्रदेश 462039 की ओर से प्रकाशित एवं गणेश ग्राफ़िक्स, 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस काम्प्लेक्स, एम.पी. नगर, जोन-1 भोपाल द्वारा मुद्रित।

सम्पादक : गुरबचन सिंह